इण्डियन
थिऑसफिस्ट

दिसम्बर 2023 खण्ड 121 अंक 12

विषयवस्तु

आगे का एक कदम 5—7
प्रदीप एच. गोहिल

पवित्र स्थानों की शक्ति 8—12
टिम बॉयड

अविद्या अलगत्व का कारण 13—19
सुव्रलिना मोहन्ती

समाचार और टिप्पणियां 20—34

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक ष याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्‌देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोभिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली चि या है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म—विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृभिट में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच गोहिल

आगे का एक कदम

व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा क्षण आता है कि उसे प्रतीत होता है कि जो कुछ भी उसके जीवन में हो रहा है वह उसकी समझ से परे है। आध्यात्मिक जागरूकता और उसके जीवन की आध्यात्मिक प्र र्जा और जीवन शक्ति से सम्बन्धित है। आध्यात्मिक प्र र्जा का अस्तित्व जीवन को समझनें की विभिन्न विधियों में है और इस प्रकार एक से अनेक लोगों में फैलती है, किन्तु जब कोई एक विशेष बिन्दु पर पहुंचता है, तब व्यक्ति प्रतीत करता है कि आध्यात्मिक प्रकाश की प्राप्ति किस प्रकार जीवन को परिवर्तित करनें में सहायता करता है।

प्रकाशन एक ऐसी स्थिति है जिसे लोगों नें भूत काल में प्राप्त किया है। यह कठिन है किन्तु आज भी उस स्थिति को प्रतीत कर पाना असम्भव नहीं है। यह एक आध्यात्मिक स्थिति है। इसका भौतिक लोक में ही अनुभव किया जा सकता है। इस स्थिति में वह कुछ करता नहीं है, वह केवल 'अलग मस्तिष्क वाले एक साधारण व्यक्ति' का साक्षी होता है। वह जो देखता और करता है उसका 'दृष्टा' के रूप में साक्षी होता है। उदाहरण के लिये जब वह एक सिनेमा देखने जाता है वह हीरो को या कहानी को बदलता नहीं है किन्तु केवल सब का साक्षी होता है। इसलिये यह प्रत्येक वस्तु को केवल देखनें का अनुभव होता है। फिर भी यह बाहरी परिस्थितियों को परिवर्तित करनें में सक्षम नहीं होता है। विचार सदा अस्तित्व में रहेंगे किन्तु वह स्वयं उनसे अलग है।

परिवर्तन अलग है। वेदों में परिवर्तित स्थिति का अमृत स्थिति के रूप में संकेत है। इस स्थिति में मन बहाव में तो होता है किन्तु इस बहाव के साथ वह मन को शुद्ध करता रहता है। उदाहरण के लिये, रावण के प्रकरण में प्रकाशित होनें पर उसनें अपने द्वैधवृत्तिक मन को परिवर्तित नहीं किया। किन्तु परिवर्तन का प्रभाव यह होता कि उसका मन राम के मन की भांति हो जाता – दिव्य मन। जब कोई दूसरे के मन को देखता है तो वह उसे शुद्ध और अशुद्ध के मिश्रण के रूप में देखता है। फिर भी बुद्ध के प्रकरण में हम देख सकते हैं कि वह पूरी तरह से शुद्ध था, वे प्रकाशित से परे थे। वे एक परिवर्तित स्थिति में थे।

परिवर्तित मन पूरी तरह से शुद्ध होता है। लोग सोचते हैं कि यह सम्भव नहीं है, इसीलिये प्रकाशित होनें का मार्ग भी। किसी को अपने मन में असन्तुष्ट, चाेधित और उद्विग्न नहीं होना चाहिये और न इससे भागना चाहिये। यदि

उसका मन परिवर्तित हो जाये तो सारा संसार परिवर्तित हो जायेगा। आज की आवश्यकता प्रकाशित होना नहीं है, क्यों कि उसके माध्यम से समस्यायें हल नहीं की जा सकती हैं। केवल परिवर्तन ही है जिसके माध्यम से संसार बदलेगा। जब कोई ध्यान के लिये बैठता है मन अपने आप परिवर्तित होता है क्यों कि वह अपने अन्तर में दिव्य से मिलता है। जब दिव्य और धनात्मक प्र र्जा जागृत हो जाती हैं और व्यक्ति के मन में बहती हैं तो यह मन को परिवर्तित करता है। उसका मन शुद्ध हो जाता है और उसके विचार और चि यायें उसी के अनुगामी हो जाते हैं। ध्यान परिवर्तन का मार्ग है।

आध्यात्मिक प्रकाशन के लिये 10 कदम –

1. प्रकाशन के प्राथमिक कदमों में से एक है प्रेक्षण और स्फुरणा। अपने जीवन को वस्तुओं और आस पास होने वाली घटनाओं के प्रति अधिक रुचि और समर्पण के भाव से देखिये। क्या, क्यों और इसी प्रकार के प्रश्न उसको आध्यात्मिक जीवन के द्वार तक पहुंचानें में सहायक होंगे। इस प्रकार उसकी जागरूकता उसकी आध्यात्मिक जागरूकता जागृत करनें में सहायक होगी। यह आध्यात्मिक प्रकाशन में पहला और उच्चतम कदम होगा।

2. दूसरा कदम संबन्धित होनें का भाव है। एक संबंध उन वस्तुओं से साझा करता है जिनसे तुम सम्बन्धित होना चाहते हो। आध्यात्मिक प्रकाश तक पहुंचनें के लिये, व्यक्ति को अन्य मानवों से संचार और अपनी प्र र्जा को साझा करना करना चाहिये।

3. तीसरा कदम है अपनी आसक्तियों को पीछे छोड़ देना। जब किसी में आसक्तियां होती हैं तो वह आस पास की घटनाओं के बारे में जागरूक नहीं रह पाता है। इस प्रकार कोई एक बार 'आध्यात्मिक प्रकाश' की ओर यात्रा पर फोकस करता है, तो उसे अपनी सारी भौतिक वस्तुओं और भावनाओं को पीछे छोड़ना होता है। यह उसकी सच्ची आत्मा और उसके विचारों और विश्वासों को बाहर आने देता है।

4. चौथा कदम प्रवृत्तियों में भी आंतरिक शांति और स्तब्धता की खोज है। कभी कभी व्यक्ति की अनेक प्रकार की भावनायें मनुष्य के मन में प्रवेश करती हैं किन्तु वह जीवन की महान वस्तुओं पर

लगाता है और उसकी समस्याओं के हल निकल आते हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक प्रकाश प्रारम्भ हो जायेगा।

5. पांचवां कदम अपनी बुद्धिक स्फुरणा के विकास का है। यह तुम्हारे आध्यात्मिक प्रकाशन को आसान कर देगा। तुम्हारे आस पास की प्रत्येक वस्तु में प्र र्जा वर्तमान है। नियमित रूप से इस प्र र्जा से सम्बन्धित होनें का प्रयास कीजिये।

6. छठवां कदम अपने और अन्य सभी के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करनें का है। समानुभूति अपने आस पास आध्यात्मिक प्र र्जा को प्रतीत करनें की योग्यता बढ़ाती है।

7. सातवां कदम है अपनें भयों को मान लेना है, जैसे अपनी वस्तुओं के खो जानें का भय, अपनें निकट और प्रिय सम्बन्धियों के छूट जानें का भय और अपनें स्वयं के मरनें का भय आदि। जब व्यक्ति ऐसे छुद्र बातों पर चिन्ता करना छोड़ देता है और वास्तविक जीवन पर फोकस करता है, वह प्रकाशित हो जाता है और आध्यात्मिक यात्रा की ओर मार्ग पर चलना प्रारम्भ कर देता है।

8. विश्वसनीय होना, वास्तविक आत्मा को मानना और अपनी सच्ची आत्मा का हो जाना आध्यात्मिक प्रकाशन के दिग्दर्शक हैं। इसके साथ विश्वास और अपनी आत्मा का गहन साक्षात्कार भाव आता है।

9. प्रत्येक को फलना फूलना, सीखते रहना, और आध्यात्मिक उत्थान करना चाहिये। आध्यात्मिक प्रकाश वाले व्यक्तियों की प्र र्जा का एक स्तर होता है, जिसे दूसरों के विकास में भलाई के लिये प्रयोग किया जाना चाहिये।

10. प्रत्येक सम्भव विधि – ध्यान, दान, स्वयंसेवा, और दूसरों की सहायता से जीवन और प्र र्जा का विस्तार कीजिये। तब जैसे जैसे तुम्हारा उत्थान होगा तुम्हारा आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त होगा जो तुम में आध्यात्मिक प्रकाश और परिवर्तन लायेगा।

अभी से इन दिशाओं में विचार और कार्य करना, जीवन की उचित दिशा में आगे का एक कदम होगा

टिम बॉयड

पवित्र स्थानों की शक्ति

एक आधारभूत सिद्धांत है जो आध्यात्मिकता को परिभाषित करता है। उसे एक शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है – एकत्व या एकपन या परस्पर निर्भरता। पीछे छूटे हुये और धूमिल हुये एकत्व का भाव सच्चे आध्यात्मिक मार्ग का आधार है। आध्यात्मिक जीवन का प्रत्येक प्रयास चुनौती पूर्ण होता है। इसका सम्बन्ध कुछ अंतर्निहित कठिनाइयों से है। जो प्रारम्भिक चुनौती हमारे सामनें आती है वह है गलत दिशाओं में हमारी शिक्षा जो हमारे जीवन काल में प्राप्त हुयी है। और तब जीवन की शक्तियों का प्रवाह विलोम दिशा में करना। इस जीवन में हमारे समय का अधिकांश भाग अपने को उलटी दिशा में प्रशिक्षण देना होता है जो हमें आध्यात्मिक जीवन से दूर ले जाता है।

यदि हम सामान्य जीवन के जीनें की विधि पर दृष्टि डालें, ता इसका फोकस स्वार्थपरक है। इसके दैनिक जीवन में सोचनें और कार्य करनें का क्षेत्र मेरा जीवन, शरीर, विचार, परिवार, राष्ट्र, योजनायें, खुशी, भविष्य, स्वास्थ्य, आदि हैं। इस लिस्ट से हम सभी अच्छी तरह से परिचित हैं। अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और चाहतों पर अन्तहीन जोर। बहुत से लोगों के लिये पुर्नजन्म अस्तित्व का एक सत्य है, किन्तु अनेक जन्मों के मिले जुले प्रभाव के बिना, जिनमें व्यक्ति आत्मकेन्द्रित जीवन के कर्म–जनक कार्य करता रहा है, का वर्तमान जन्म काल के एक निष्ठापूर्ण विश्लेषण से समझ में आ सकता है कि किस प्रकार हम अपने को संस्कारित करते हैं।

जब भी हम एक ऐसे बिन्दु पर पहुंचते हैं, जब हमारा ध्यान अध्यात्म की ओर मुड़ता है, तब कुछ कठिनाइयां और बाधायें आती हैं जिनका हमें सामना करना होता है। शीघ्र या देर से, इस जन्म में या आगे के किसी जन्म में हमें अपनें मन में अध्यात्म की कुछ अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। इसका प्रारम्भ कोई मनुष्य, कोई पुस्तक या कोई व्यक्तिगत विपत्ति करवा सकती है। अंत में एक अन्य संभावना की दृष्टि अंतर में प्रकट होती है जो एक प्रकार से नयी होती है। अनेक इस स्थिति का नाटकीय ढंग से वर्णन करते हैं – पुनर्जन्म, जागरूकता, अंधकार से प्रकाश में वापसी।

हम जागरूक हो जाते हैं कुछ और अधिक की आवश्यकता होती है। सबसे पहले मार्ग पर दिशानिर्देश की आवश्यकता होती है। मनुष्य के पूरे

इतिहास में अनेक ऐसे लोग आये हैं और मनुष्य को उसकी गहनता से पुनर्सम्बन्धन के लिये निर्देशित किये हैं। वे पहले से ही आंतरिक आयामों में उपस्थित होते हैं। एक वस्तु जिसके बारे में हम जागरूक हो जाते हैं, वह है किसी विशेष जीवन के ढांचे में ढलनें की आवश्यकता, जो गहन आयामों में हमारे प्रवेश का उन्नयन करता है।

अनेक आध्यात्मिक परम्पराओं में महान शिक्षक हमें बताते हैं कि आध्यात्मिक जीवन का अनुभव करने के लिये तुम्हें 'अपने संसार से हमारे संसार' में आना होगा — शिक्षकों की आवश्यकता होती है। हमें इस दिशा में प्रगति के लिये कुछ उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन उपकरणों में पवित्र स्थानों की शक्ति एक है। हम सभी इनके बारे में जानते होंगें, या कम से कम सुना होगा — जहां यदि कोई जाता है तो उसे पवित्रता और आशीर्वाद की शक्ति प्राप्त होती है। यूनाइटेड स्टेट्स के पश्चिमी तट पर एक प्रसिद्ध रेड वुड पार्क है, जिसमें इस ग्रह के कुछ बहुत पुरातन वृक्ष हैं। मेरे पिता मेरे बचपन में मेरे भाई के साथ मुझे वहीं ले गये थे। हम लोग सामान्य बच्चे थे और वहां खूब खेले, हंसे, और शोर किये थे। मुझे याद है कि कैसे जब हम उस जंगल में पहुंचे थे तो हमारे वार्तालाप फुसफुसाहट में बदल गये थे। उस पवित्र स्थान पर बिना किसी निर्देश, विचार, किसी प्रतिचि या के बच्चे के प्रति भी प्रतिचि या बहुत शांति पूर्वक करनी होती थी।

इस प्रकार के स्थान पूरे संसार में हैं। उनमें से कुछ प्राकृतिक संसार के गुण धर्म वाले हैं — पहाड़, झीलें, नदियां, जंगल, और गुफायें। ये पृथ्वी पर प्र र्जा की लाइनों द्वारा विकसित हुयी हैं जो आंतरिक शक्तियों और प्राणियों को आकर्षित करती हैं। तब, ऐसे भी स्थान हैं जो मानवीय प्रयोग ओर अन्तर्चि या से बनते हैं। अनेक प्रकार से ऐसे स्थान विशेष कायों के लिये डिजाइन किये गये हैं। अनेक पीढ़ियों की फोकस्ड उपस्थिति, जिन्होंने अपना जीवन और समझ यहां अर्पित किया है, नें आध्यात्मिक प्रकृति की शक्तियों को आकर्षित किया है।

थिऑसफिकल सोसाइटी का इतिहास और अडयार उसी प्रकार का स्थान है। प्रज्ञान के मास्टर्स और उनके अभिकर्ता हेडक्वार्टर्स भवन की छत पर एकत्रित लोगों के समक्ष अनेक बार प्रकट हुये थे और यहां की श्राइन पर पत्र अवक्षेपित किये थे और टीएस के कार्यों के बारे में इस सीमा तक सलाह दी थी कि ऐनी बेसैन्ट नें इसे 'मास्टर्स का होम' नाम दिया था। इस प्रकार के स्थान

मानवीय प्रयोग द्वारा पवित्र हो जाते हैं, गहन और उद्देश्यपूर्ण और रचनात्मक अनुगमन से यह पवित्र हो गया है। इस प्रकार के महान स्थान से अपने को संबंधित करना और ऐसी उपस्थितियों और प्र र्जा से स्नान करना बहुत मूल्यवान है।

बुद्धिस्ट परम्परा की एक कहानी है जो इसे प्रदर्शित करती है। एक शक्तिशाली और प्रचलित अभ्यास है जिसे 'लविंग काइण्डनेस या मेत्ता ध्यान कहते हैं। साधारण शब्दों में कहा जाये तो इसमें एक कामना उत्पन्न और प्रसारित की जाती है कि अपने को सम्मिलित करते हुये सभी प्राणियों में सुरक्षा, संरक्षण, शांति, खुशी और स्वास्थ्य का सामान्य भाव होता है। मेत्ता ध्यान का अस्तित्व कुछ इस प्रकार हुआ। बरसात के महीनों में, बुद्ध के शिष्य यात्रा नहीं कर पाते थे वे किसी स्थान पर कैंप बना लेते थे। यह ध्यानपूर्ण विश्राम का समय होता था। एक बार उनके भिक्षुओं के समूह को जंगल में बहती हुयी नदी के पास एक अच्छा स्थान मिल गया, जो प्रत्येक प्रकार से उपयुक्त स्थान था। एक बार जब वे वहां बस गये तो उन्होंनें पाया कि वहां पर उनका ध्यान और मन की शांति लगातार बाधित हो रही थी।

स्पष्ट था कि उन लोगों की उपस्थिति कुछ नेचर स्पिरिट्स को परेशान कर रही थी। वे स्पिरिट्स तरह तरह की डरावनी आवाजें, दुर्गन्ध निकाल कर और अन्य प्रकार से भिक्षुओं को वहां से भगाने का प्रयास कर रही थीं। भिक्षुगण बुद्ध के पास वहां से कैंप हटाकर कहीं अन्य समरसता पूर्ण स्थान पर ले जानें की अनुमति लेने के लिये गये। भगवान बुद्ध नें उनको वहीं रुकनें को कहा और मेत्ता ध्यान सिखाया जिसको प्रतिदिन करनें की सलाह दी। उसमें इन परेशान करनें वाली स्पिरिट्स और सभी के लिये शांति, खुशी, सुरक्षा और स्वतंत्रता आदि की कामना उत्पन्न करनें को कहा। उन्होंनें ऐसा ही किया और कुछ समय बाद सब शांत हो गया। और बाद में यह स्थान पवित्र स्थान बन गया।

मानवीय संलग्नता से पवित्र स्थान बनना एक ऐसा विषय है जिस पर हमारा कुछ नियंत्रण है। जहां हम रहते हैं वे इसी प्रकार के वे स्थान बन जानें चाहिये। हां, हम शांति के लिये और अपनी आत्मा के उत्थान के लिये मंदिर जाते हैं, किन्तु इसे पाने के लिये हमें अपने घर को नहीं त्यागना चाहिये। इसलिये इसे हम कैसे करें? हम एक अनवरत आध्यात्मिक प्रभाव का स्रोत कैसे विकसित कर सकते हैं?

एक उदाहरण – किसी के पास एक बहुत सुगन्धित अगरबत्ती है जिसे किसी विशेष स्थान पर जलाते हैं। जब हम उस स्थान के पास जाते हैं तो प्रवेश करनें के पहले ही उसकी सुगन्ध आ जाती है। जब हम उसके अन्दर पहुंचते हैं तो हम अपनें को उसमें स्नान किया हुआ प्रतीत करते हैं। और यदि हम उसमें लम्बे समय तक रहते हैं तो वह हमारे संज्ञान में नहीं रहता है और वह हमारे लिये सामान्य हो जाता है। जब हम उस स्थान को छोड़ते हैं तो जो सुगन्ध हमारे कपड़ों, बालों, त्वचा और हमारे वातावरण में सोख गयी है उसके बिना अपने विचार को हम उन तक प्रसारित करते हैं।

अपने स्थानों को हमें आध्यात्मिक स्मारक बनानें चाहिये। हमें सदा खानें के लिये, सोनें के लिये, नहानें के लिये, विशेष स्थानों की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार एक कमरे का कोना हमारे आध्यात्मिक जीवन के सम्बन्धों को समर्पित होना चाहिये। हम अपने जीवन के प्रत्येक कार्य के लिये विशेष कमरा रखते हैं। किन्तु ध्यान या मन को शांत करनें के लिये, जो सबसे अधिक लाभदायक चि या है, उसके लिये कोई विशेष कक्ष नहीं। इसलिये अपने घर में एक स्थान बनाओ जहां यह शक्ति सांह्मित की जा सके। जब मैं कालेज में था तब डार्मिटरी कक्ष को साझा करता था। मुझे याद है कि मैनें अपनी कुर्सी के पीछे एक स्थान बनाया था जहां मैं अपने को शांत करनें का अभ्यास करता था।

गम्भीर लोगों के चित्र या प्रतीकात्मक आकार उन सम्भावनाओं के अनुस्मारक हैं। यदि हम अचेतन भी उनके पास से गुजरते हैं वे हमारे साथ प्रतिचि या करते हैं। ये वे वस्तुयें हैं जो हम कर सकते हैं। ऐसा कहा गया है कि जब हम ध्यान करते हैं, और जब हम बिल्कुल शांत हो जाते हैं, वह स्थिति अनेक प्रकार के अदृश्य जीवनों के लिये बहुत आकर्षक होता है और मन की स्तब्धता के अनुपात में वे हमारे आस पास अनेक विचित्र प्रकार की आत्माओं को एकत्रित कर लेते हैं। य्या और अधिक स्पष्टता से कहें तो वह हमें महान आत्माओं की ओर ले जाता है।ह

फूलों के रंग और उनकी सुगन्ध मधुमक्खियों को आकर्षित करते हैं और कूड़े का ढेर भी कुछ कीटों को आकर्षित करते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं। हम अपने विचारों को इन्हीं प्रकार के पदार्थ मानें। अपने विचारों के फोकस और उनकी जागरूकता के आधार पर संसार में हमारे साथियों का निर्धारण करता है।

महात्मा द्वारा ए. ओ. " ूम को लिखे गये पहले पत्र में यह विशेष बात लिखी गयी है कि हमारी सोच के आधार पर ही हम अपने आसपास के ''स्थान पर लोगों की धारायें'' एकत्रित करते हैं। प्रत्येक क्षण हम एक भीड़ का वातावरण बनाते हैं जो जीवन में हमारे साथ चलती है। माता–पिता बच्चों को सामान्य रूप से यही अनुदेश देते हैं कि वे अपने मित्र बुद्धिमानी पूर्वक चुन चुन कर बनायें क्योंकि उनका उनके जीवन में प्रभाव पड़ता है। चुननें में बुद्धिमानी एक चुनौती है।

यदि हम मैत्रीकरण की इस गुणवत्ता की इस सलाह को अपने " दय से लेते हैं तो एक विशेष बिन्दु पर दूसरे संसार में स्थापित हो जाते हैं। हम कहीं नहीं गये हैं, किन्तु अपने साथियों के समूह को नाटकीय ढंग से बदलते रहते हैं और उस बदलाव से हम स्वयं प्रभावित होते हैं और प्रभावित करते हैं। लोगों से चलना, बिना किसी बातचीत के, एक दूसरे को स्पर्श करते हैं। यह हमारी जागरूकता, हमारे फोकस और समय मे हमारे बर्ताव के परिणाम हैं। यह आज नहीं होगा क्योंकि हमनें कल ऐसा सोचा था। यह एक प्रचि या है। समय के साथ, धैर्य, और मेधायुक्त प्रयास से हम संसार में एक नयी दिशा के लिये प्रभावी उपकरण बन जाते हैं।

य्सैजन्य से – द थिऑसफिस्ट, नवम्बर 2023ह

सुब्रलिना मोहन्ती

अविद्या अलगत्व का कारण

हम जब अपने आसपास देखते हैं तो पाते हैं कि लोग विकास के अलग अलग स्तरों पर हैं — एक या दूसरी प्रकार से, कोई किसी से आगे कोई कुछ पीछे है। हम में कुछ विकास की प्रचि या में कुछ उच्च संवेदन शक्तियां अनावृत्त करनें में सफल हो चुके हैं, किन्तु हम अभी सुप्तावस्था में हैं।

हम पाते हैं कि पहले के विकास में विभिन्न स्तर हैं — वनस्पतियां खनिजों से प्र पर हैं, जन्तु वनस्पतियों से प्र पर हैं इसी प्रकार मानव साम्राज्य जन्तुओं से प्र पर है। उसी प्रकार मानव साम्राज्य के विभिन्न अंग हैं। जब वह एक सीमा रेखा पार कर लेता है तो वह मनुष्य से प्र पर एक सुपरमैन या परामानव हो जाता है। मानव की प्रगति धीमी है किन्तु यह लगातार है। इसलिये, पूर्ण या मैच्योर मानव संख्या में बढ़ रहे हैं। सामान्य समय में, इसके पहले कि हम उस स्तर तक पहुंचें, हमें अनेक जन्म लेना पड़ता है, किन्तु यह हमारे लिये सम्भव है कि हम मार्ग में अपनी गति को बढ़ा लें और अपनी भविष्य की यात्रा को कुछ ही जन्मों में संघनित कर लें, जो अन्यथा अनेकों हजार वर्षों में होता।

थिऑसफिकल सोसाइटी एक वैश्विक आन्दोलन है जिसे श्वेत बन्धुत्व के कुछ सदस्यों द्वारा एक विशेष उद्देश्य से स्थापित किया था। थिऑसफिकल सोसाइटी का पहला उद्देश्य है कि संसार में मानवता के विश्वबन्धुत्व का नाभिक बनाना।

हम नीचे के संसार में सूर्य प्रकाश के वितरक हैं, इसलिये हमें भी, अपने स्तर पर प्रेम और आनन्द के चमकीले सूर्य होना चाहिये। संसार इसका प्रशंसक नहीं होगा, उनकी समझ के बाहर होगा किन्तु हमारा कर्तव्य है कि हम प्रकाशित हों। जैसा कि एक अडेप्ट नें कहा है, 'अपनें अधिकारों के बारे में कम और अपने कर्तव्यों के बारे में अधिक' सोचें।

व्यक्तित्व जिसे हमनें हजारों वर्षों में बनाया है, वह शक्तिशाली हो गया है, आत्मनिष्ठ हो गया है, और उसकी इस प्रवृत्ति को उलटना और इसे दूसरों के दृष्टिकोण से देखनें को विवश कर पाना सबसे कठिन कार्य हो गया है। हम

1. भारतीय सेक्शन टीएस की राष्ट्रीय वक्ता और प्रयास लॉज गाजियाबाद, उ0प्र0 की सचिव
2.दि0 29 अक्टूबर को वाराणसी में हुये भारतीय सेक्शन के कन्वेंशन में प्रस्तुत किया गया वक्तव्य।

अपने अस्तित्व को विस्तार देने के लिये आसानी से तैयार नहीं होते हैं। अहंकार का प्रभाव बहुत अधिक है। यदि हम इसको प्रतीत नहीं कर पाते और इस पर कार्य नहीं कर पाते हैं, तो हम प्रगति नहीं कर पायेंगे।

बुद्धिज्म में एक आधारभूत अवधारणा है — सक्कयादित्त एक पाली शब्द है जिसका अर्थ है, ''यह माया कि व्यक्ति स्वयं में एक व्यक्तिगत पहचान है''। पातंजलि के योग सूत्र के अनुसार अविद्या, अस्मिता, राग, द्वे ा, अभिनिवेश क्लेश हैं जो सारे दुखों का कारण हैं।

इसलिये अविद्या — वास्तविकता के ज्ञान की कमी पहला कारण है जिसके कारण स्वयं के अलग अस्तित्व होने का भाव विकसित होता है। यही हमारे राग और द्वे ा का भी कारण है। इन्हीं पसन्द और नापसन्द के कारण हम अलगत्व का भाव विकसित करते हैं। अविद्या का हमारी मेधाशक्ति या तर्कबुद्धि से प्राप्त ज्ञान से कुछ लेना देना नहीं है, वह भौतिक संसार से सम्बन्धित ज्ञान है। एक व्यक्ति महान विद्वान हो सकता है फिर भी मन द्वारा उत्पन्न की गयी माया में डूबा हुआ हो सकता है, क्योंकि उसमें अपनी सच्ची प्रकृति की जागरूकता नहीं है। हम में से अधिकांश लोग शाश्वत या शुद्ध आत्मा और निम्न आत्मा में अंतर समझ नहीं पाते हैं।

वैज्ञानिक हमें बताते हैं कि मनुष्य कोई 70 मिलियन वर्ष पहले एप्स ख्बंदरनुमा जीवह्न से विकसित हुआ था। उसके पहले यह ग्रह अनेक मिलियन व ा पहले बिना मनुष्य के अस्तित्व में रहा है और हमें अपने आप से प्रश्न करना चाहिये कि क्या विकास उचित दिशा में चल रहा था? किसी दृष्टिकोण से मनुष्य ने रचनात्मक दिशा में आश्चर्यजनक उपलब्धियां अर्जित की हैं, किन्तु सारा कुछ कुल मिला कर बहुत कम है क्योंकि एक दूसरे दृष्टिकोण से वह अभी भी बिल्कुल प्रारम्भिक स्थिति में है। एक मिलियन वर्ष पहले भी — मनुष्य कबीलों और समूहों में बंटा हुआ था और वे अपने अपने समूहों का संरक्षण करते थे और दूसरे समूहों पर आच्र मण करते थे। अपने कबीले के लोगों से प्रेम करता था और दूसरों कबीलों के लोगों से घृणा करता था। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से क्या हम अभी भी वैसे ही नहीं हैं ?

मानवता के बन्धुत्व का सिद्धांत एक शाश्वत सत्य है जो संसार की प्रगति को उन दिशाओं में नियंत्रित करता है, मानव प्रकृति को पशुओं की प्रकृति से अलग पहचान करवाता है। लोगों को यह समझाने की आवश्यकता है कि

यदि पूरी मानवता का मूल एक ही है तो एक सत्य भी होना चाहिये जो सारे धर्मों के माध्यम से अभिव्यक्त होता हो। जब तक प्रत्येक मनुष्य समझनें की स्थिति में नहीं आ जाता है और मान लेता है कि किसी व्यक्ति को गलत समझनें से हम न केवल अपने को गलत सिद्ध करते हैं बल्कि सारे लोगों को भ्रमित करते हैं। और तब कोई बन्धुत्व की भावना जैसा कि सभी महान सुधारकों द्वारा सिखाया जाता है नहीं विकसित की जा सकती है। विभाजन और घृणा अज्ञान के कारण विकसित होते हैं और संदेह अलगाव के भाव का उन्नयन करता है। सभी महान धर्म अपनें बहिर्मुखी कर्मकांडों में भिन्न भिन्न हो सकते हैं। किन्तु सब का " दय एक है। परम सत्ता और मनुष्यों के प्रति प्रेम।

भिन्न–भिन्न धर्म एक ही सत्य तक पहुंचनें की अलग अलग राहें हैं। विश्व बन्धुत्व की राह में सबसे बड़ा खतरा समान विचार वाले लोगों से अपनी पहचान करनें में है। इसनें मानवता को अनेक समूहों में बांट दिया है – धार्मिक समूह, राष्ट्रीय समूह, नश्ल समूह, भाषायी समूह, जातीय समूह, व्यवसायिक समूह, राजनैतिक समूह, पारिवारिक समूह आदि, जो समय समय पर दूसरे समूहों के विरोधी हो जाते हैं, जब उन्हें लगता है कि उन्हें अपना स्वयं का हित संरक्षित किया जाना चाहिये। किसी समूह से जुड़नें की किसी व्यक्ति की कामना समूह में जुड़ने के पीछे उसकी संरक्षण का भावना होती है। फिर भी यह स्पष्ट है कि समूहों में इस प्रकार बंटना ही संसार के समक्ष मानवता के विनाश का खतरा बन गया है, युद्ध, तोड़ फोड़ और स्पर्धा के माध्यम से।

लोगों में सारे विभाजन यह मान कर होते हैं कि हम दूसरों से अलग हैं, जो अपने को अलग माननें के कारण होती है। अपनी चेतना में क्या हम वास्तव में दूसरों से अलग हैं, या केवल विचारों में अलग हैं। यदि हम बाहरी आवरणों से परे जाकर देखें तो हम पायेंगे कि प्रत्येक मानव मे एक ही प्रकार से भय का भाव है, असुरक्षा का भाव है, अकेलेपन का भाव है, और जीवन में सफल होनें की कामना है। हमनें बाहरी आवरणों को बहुत अधिक महत्व दिया है, इसीलिये हम प्रतीत करते और सोचते हैं कि हम दूसरों से अलग हैं। यदि हम जानते होते कि अपनी चेतना की गहराइयों में, जिसके हम मनुष्य गण हैं, केवल अपने बारे में बाहरी ज्ञान से नहीं किन्तु अपने पूरे अस्तित्व को, तो यह एक महासागर की लहर की भांति है। लहर पानी से बनी है जिसकी 7 मील की गहराई सभी लहरों के लिये सामान्य है, किन्तु ये अपने को अलग अलग प्रतीत करती हैं क्योंकि सतह पर ये दूसरी लहरों से कुछ अलग हैं। इसलिये कोई विभाजन नहीं है, हम अपनी

अज्ञानता के कारण विभाजित हैं। और यह अज्ञानता ही है जिसे हटानें की आवश्यकता है। इसलिये यह हमारी भ्रांति है, जो हमें विभाजित करती है। वास्तव में कहा जाय तो कोई विभाजन नहीं है, और यदि हम यह अज्ञान मिटा दें तो किसी एकीकरण की, और विश्वबन्धुत्व को फैलाने की आवश्यकता नहीं है।

एक संसार जो इस प्रकार विभाजित है, में हमारा क्या उत्तरदायित्व है? हमें जांच करनी चाहिये कि क्या गलती हो गयी है? और हम तथाकथित प्रगति की राह पर क्यों चल रहे हैं? उचित दिशा कौन सी है? हमें देखना चाहिये कि हम किस प्रकार के व्यक्ति तैयार कर रहे हैं, क्योंकि संसार हम और तुम जैसे व्यक्तियों से मिल कर बना है। हम जो चाहें वह कर सकते हैं, और जो हम करेंगे, वह भविष्य की पीढ़ियों पर अत्यंत प्रभाव डालेगा, उनके मनों को प्रभावित करेगा।

हम अपनी युवा पीढ़ी अपनी स्वयं के चित्र के अनुसार बनाते हैं। विचारों में कुछ छोटे मोटे अंतर हो सकते हैं किन्तु मोटे तौर पर अगली पीढ़ी पिछली पीढ़ी के चित्र के अनुसार विकसित होती है और जिसका अर्थ है कि हम अपने पूर्वाग्रहों को सफलता पूर्वक अगली पीढ़ी को परावर्तित करते रहते हैं। हम न केवल पूर्वाग्रहों को प्रेषित करते हैं, बल्कि सामान्य पूर्वाग्रहों के समूह बन जाते हैं। इस प्रकार भिन्न–भिन्न समूह बन जाते हैं और हम अलगत्व प्रतीत करते हैं। हम जानते हैं कि समय के साथ विचारों के अनुभवों के कारण हम अपने संस्कार परिवर्तित करते रहते हैं और किन्हीं दो समूहों में अंतर हमारे संस्कारों के कारण भी होता है।

विद्यालयों में हम उन्हें सिखाते हैं कि एम्बीसस या अभिलाषायुक्त बनो। जिस बच्चे में सक्षमता है, मेधावी है उसकी हम प्रशंसा करते हैं और जो बच्चे धीमे होते हैं उनको हम निम्न दृष्टि से देखते हैं। पूरे विश्व में यही ढांचा है। हम व्यक्तियों को उस दिशा में ठेलते हैं जिसे हम उचित समझते हैं। बच्चों को यह सिखानें के बजाय कि वह वह कार्य करे जिनमें उसकी रुचि हो, हम उनको वह करनें को कहते हैं जो उन्हें सर्वश्रेष्ठ आय देगा और जिसकी लोग प्रशंसा करेंगे। अतः वह उस दिशा में चल पड़ता है जो उसकी व्यक्तिगत रुचि या मेधा में नहीं है, पर उस ओर जिसकी संसार उससे अपेक्षा करता है। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह एक ऐसा व्यक्ति बन जाता है जो अहंकारी, चू र और अभिलाषी हो जाता है।

विद्यार्थियों को विभिन्न आयु समूहों के लोगों से वार्तालाप करनें देने

देना चाहिये ताकि वे उनके साथ संतुलित बातचीत कर सकें। इस वार्तालाप से वे लचीलापन और स्वीकारना सीखेंगें। प्रत्येक दिन एक नया मित्र बनानें से विद्यार्थियों का जीवन एक महान आनन्द हो जायेगा। मान लीजिये उसकी कक्षा में 30 विद्यार्थी हैं, क्या वे कक्षा के सभी विद्यार्थियों से मित्रता रख सकते हैं और सारे विद्यार्थियों से निकट के सम्बन्ध बना सकते हैं? अधिक संभावना है कि नहीं। यदि वे सभी के साथ मित्रता का संबंध नहीं रख सकते हैं तो क्या वे स्कूल छोड़नें के बाद पूरे संसार के मित्र कैसे बन सकते हैं। स्कूल वह स्थान है जहां वे अपनी योग्यता बढ़ा सकते हैं। क्लासरूम में आधारभूत मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। एक बच्चा इन मूल्यों के साथ जन्म लेता है और शिक्षकों को इनको अनावृत्त करना चाहिये। मानवीय मूल्य सह अनुभूति, सहयोग, मैत्री, मुस्कान, हंसी, हल्कापन, सहायक प्रकृति, अपनापन और एक दूसरे की देखभाल आदि होते हैं। केवल स्कूल जाना और कुछ पाठ याद करना ही शिक्षा नहीं है जिसकी विद्यार्थी को आवश्यकता है। हमें शरीर और मन के संपूर्ण विकास होने देना चाहिये क्योंकि वे आपस में संबन्धित हैं।

''एक छोटी सी कहानी है 'अंधेरा और उजाला'।

एक शिक्षक था। और पास के गांवों के लोग उसकी सलाह लेने के लिये उससे मिला करते थे। शिक्षक और उसके विद्यार्थी उसको सुनते थे और समस्याओं के हल प्रस्तुत करते थे।

एक विद्यार्थी जिसनें इस प्रकार के अनेक विवेचनों में भाग लिया था, अधीर हो गया।

''ये लोग इतनें अज्ञानी हैं'' वह अपना सिर हिला देता था, और असन्तुष्ट हो कर चिल्लाता था, ''संसार में इतनी अज्ञानता है!''

उसके शिक्षक नें इसे नोटिस किया। उसनें उस विद्यार्थी को समझाया कि वह दूसरों को नीचा न दिखाये। किन्तु बेकार रहा।

एक दिन विद्यार्थी और शिक्षक टहल रहे थे। वे एक बड़े हाल के पार आये और उसके अंदर चले गये। यह संध्या का समय था और हाल में अंधेरा था। शिक्षक नें कहा, ''यहां अंदर बहुत अंधेरा है!''

''हां, अंधेरा है'' विद्यार्थी नें कहा।

शिक्षक नें फिर कहा, ''ओह! यहां पर इतना अंधेरा है।'' उसकी भाषा में

असन्तुष्टि का भाव था।

विद्यार्थी असमंजस में था। वह शिक्षक की ओर देख कर बोला, ''हां सर! वास्तव में बहुत अंधेरा है।''

लगा कि टीचर नें सुना नहीं, उसनें फिर से दोहराया, ''इतना अंधेरा! ओह, इस हाल में इतना अंधेरा!''

शिक्षक शिकायत करता ही रहा, तेज और उससे भी तेज आवाज में। वह बहुत गुस्से में प्रतीत हो रहा था।

काफी समय तक यह होता रहा। अंत में विद्यार्थी अपने आपे से बाहर हो गया। चिड़चिड़ा कर वह बोला, ''हां, अंधेरा है, गुरु जी। पर आप इसके बारे में बार बार शिकायत क्यों कर रहे हैं?''

''क्योंकि मै चाहता हूं कि यह अंधेरा चला जाये''

विद्यार्थी हंसा, ''इस स्थान को प्रकाशित करनें के लिये हमें दीपक की आवश्यकता है। यहां खड़े होकर चिल्लानें और शिकायत करनें से अंधेरा चला नहीं जायेगा।''

शिक्षक मुस्कराया, ''यही बात अज्ञानता के बारे में है, यह जोर से शिकायत करनें पर नहीं जायेगी। हमें ज्ञान फैलाना होगा। ज्ञान की सहायता से, सबसे अधिक अज्ञानी व्यक्ति को भी विद्वान बनाया जा सकता है।''

इसके बाद उस विद्यार्थी नें कभी कोई अड़चन नहीं की, बल्कि वह शिक्षक को उसके कार्य में सहायता करनें लगा।''[1]

या तो हम सोचें कि रक्षक आयेगा और मानवता की सहायता करेगा या हम इस उत्तरदायित्व को लेलें। यदि हम अपनी समझ को बढ़ाते नहीं हैं, यदि हम अपेक्षाकृत अच्छे मानव नहीं बनाते हैं, तब यह समस्या अस्तित्व में रहेगी एक अंतहीन प्रचि या के रूप में।

यदि विश्व प्रकाश की सभी किरणें
जिसके विरोध में हम डरे हुये हैं और लड़ते हैं?
क्या अज्ञान ही सारे संघर्ष का कारण है?
क्या खुशी एक समुचित जीवन का उप–उत्पाद है?
सांसारिक भेदभाव मनुष्य नें बनाये हैं,

सूर्य की किरणें फर्क नहीं करती हैं।

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

यह मेरा है, वह तेरा है, इस प्रकार का विचार संकुचित मन वाले लोगों का होता है। इसका विलोम उदार बुद्धि के लोगों के लोगों के लिये यह सारा संसार ही परिवार है।

वसुधैव कुटुम्बकम् वह दर्शन है जो यह समझ उत्पन्न करता है कि पूरा संसार ही एक परिवार है। यह एक सामाजिक दर्शन है, जो एक आध्यात्मिक समझ पर आधारित है कि सारी मानवता एक जीवन शक्ति से निर्मित है।

यदि दिव्य स्रोत एक है तो हम सारे व्यक्ति अलग अलग क्यों हैं? यदि पूरा सागर एक है तो सागर का एक बूंद सागर से अलग क्यों है? यदि बूंद सागर से अलग है तो अंत में यह उसमें घुल क्यों जाता है?

संस्कृतियों और परम्पराओं का अंतर हमारा गर्व है। एक बाग जिसमें भिन्न भिन्न सुगन्धों, रंगों, आकारों के विभिन्न प्रकार के फूल हैं , वे सुन्दर दिखते हैं और बाग को दिव्यत्व प्रदान करते हैं। प्रकृति विभिन्नताओं में एकत्व प्रदर्शित करती है। जब रंग अलग अलग होते हैं तो वे बिखर जाते हैं और दृश्य नहीं होते हैं। सूर्य और वर्षा के बादलों का जादुई प्रिज्मैटिक प्रभाव सूक्ष्म इंद्रधनुष बनाता है जो समरसता और संतुलन है।

हम अपना " दय खोलें, गले लगानें के लिये अपनी बाहें फैलायें, वैश्विक परिवार के लिये वैश्विक प्रेम और शांति को उत्पन्न करें।

पूरी मानवता में सब स्थानों में व्याप्त चेतना वैश्विक चेतना है जो हम में से प्रत्येक में वर्तमान है। हम सभी एक परम स्रोत से उत्सर्जित होते हैं और अन्त में उसी स्रोत में आत्मसात हो जाते हैं।

'अपने प्रेम में वैश्विक बनो। तुम विश्व का चित्र अपने ही अस्तित्व में देखोगे।''

संदर्भः

1. शान मेहता द्वारा लिखी गई कहानी 'अज्ञान का अंधेरा' 2017 में उनकी आधिकारिक साइट https://www.shonmehta.com/2017/03/darkness.html पर प्रकाशित हुई थी।

———————————————————

समाचार और टिप्पणियां

बाम्बे

दि0 1 अक्टूबर 2023 को बाम्बे थिऑसफिकल फेडरेशन और ब्लैवैत्सकी लॉज नें डा0 ऐनी बेसैंट जन्म दिवस संयुक्त रूप से मनाया। बहन अबान पटेल ने, समारोह संचालक, नें अतिथि वक्ता आस्टे्लिया की बहन चि स्टीन ग्विन और ब्लैवैत्सकी लॉज के बेसैन्ट हाल में उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। इसी हाल में डा0 ऐनी बेसैंट भाषण देती थीं और उनको सुननें के लिये लोगों की भीड़ रोड तक खड़ी रहती थी। सदस्यों द्वारा सर्व धर्म प्रार्थनायें और यूनीवर्सल प्रार्थना से आफ्वान किये गये।

बन्धु नवीन कुमार, बीटीएफ के काउन्सिल सदस्य और ब्लैवैत्सकी लॉज के उपाध्यक्ष नें अतिथि वक्ता बहन चि स्टीन ग्विन, समायोजक, लोगन सर्टीफाइड ग्रुप क्वीन्सलैंड, आस्टे्लिया का स्वागत किया। उन्होंनें महान भक्तिभाव और आभार पूर्वक ऐनी बेसैंट के उनकी 'मदर लैंड' भारत और थिऑसाफी तथा थिऑसफिकल सोसाइटी के लिये उनके योगदान पर चर्चा की।

अतिथि वक्ता बहन चि स्टी ग्विन नें एक इन्टरैक्टिव सत्र बनाया। पहले उन्होंने आस्टे्लिया में टीएस और उन पुस्तकों जिन्होंने उनको थिऑसफी के अध्ययन के लिये प्रेरित किया के बारे में चर्चा की। उन्होंनें एक प्रश्न रखा — 'अकल्टिस्ट कौन है और अकल्टिज्म क्या है?' उनके दृष्टिकोण से जैसा ऐनी बेसैन्ट नें कहा है — ४ह विचारों और भावनाओं में नियंत्रित रहना ४२ह " दय का सिद्धांत अर्थात दैनिक जीवन में सहानुभूति और करुणा। जो विचार साझा किये गये वे थे वे इस प्रकार थे — सच्चा अकल्टिस्ट अपने बारे में कठोर और दूसरों के लिये करुणापूर्ण रहता है, उनके पास सहायता के लिये आनें वाले लोगों के प्रति समानानुभूति और उसकी आवश्यकताओं की पूरी समझ, 'निम्न स्व' सदा 'उच्च स्व' से संचार के लिये तैयार रहे, मास्टर्स हमसे क्या करवाना चाहते हैं यह समझने के लिये सदा सावधान रहना, केवल थिऑसफी पढ़ना ही पर्याप्त नहीं किन्तु उसे अभ्यास में लाना। बहन दीपा कपूर नें व्याख्या की किस प्रकार टीओएस समानुभूति और कार्य के लिये प्रेरित करती है। बीटीएफ अध्यक्ष बन्धु विनायक पाण्ड्या नें कहा कि हम अकल्टिज्म के मार्ग के लिये ऐनी बेसैन्ट के जीवन से प्रेरणा लें।

बहन भूमिका नितिन मोरे, मीनू मुलन प्रतियोगिता की कॉलेज विद्यार्थी नें अपने पिता के साथ डा0 ऐनी बेसैन्ट की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किये।

ब्लैवैत्सकी लॉज की अध्यक्ष बहन कश्मीरा खम्बाता नें अतिथि वक्ता को उनको सारे उपस्थित लोगों को थिऑसफी साझा करनें के लिये प्रेरित करनें के लिये धन्यवाद दिया।

'बच्चों को प्रकाशमान भविष्य उपलब्ध कराना और उन्हें बराबर अवसर प्रदान कराना':

गैर सरकारी संगठन ग्एन.जी.ओ.ह द्वारा – सामाजिक चिन्ताओं और समाज कल्याण के लिये, समाज को जो चाहिये और सरकार द्वारा जो प्रदान किया जाता है, के बीच की कमी को भरने का प्रयास किया जाता है। प्रकृति से किसी लाभ से सरोकार न रखते हुये एनजीओ अपने सरप्लस फंडों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगाते हैं, न कि अपने सदस्यों में वितरित करते हैं।

शैक्षिक प्रायोजित कार्यक्रम जो एक एनजीओ, इंडियन एसोसिएशन फॉर एडाप्शन ऐन्ड चाइल्ड वेलफेयर ग्आई आई पी एह और थिऑसफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस, मुम्बई नें प्रदर्शित किया है कि किस प्रकार मामूली वित्तीय सहायता, सम्बन्धित सहायक सेवाओं के साथ, निम्न सोसिओ–एकनॉमिक स्तर के बच्चों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकते हैं।

परिस्थितियों का एक विचित्र सम्मिलन है – विश्व आश्चर्यजनक है। ब्लैवैत्सकी लॉज नें दि0 1 अक्टूबर को डा0 ऐनी बेसैंट की 176 वीं जन्म शताब्दी मनाई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बहन क्रिस्टीन ग्विन, अध्यक्ष, लोगॉन थिऑसफिकल ग्रुप, ब्रिस्बेन के पास, आस्ट्रेलिया, को सिनर्जी पत्रिका प्रस्तुत की गयी। यह एक विचित्र संयोग था कि उसी दिन बन्धु साइमन वेबर, वेलिंग्टन, न्यूजीलैंड लॉज, नें सिनर्जी पत्रिका को हैमिल्टन लॉज अध्यक्ष बन्धु माइक डन को दी, यद्यपि पत्रिका वेलिंग्टन महीनों पहले पहुंच गयी थी। विश्व कॉस्मिक प्रतिध्वनिता की सभी अच्छी घटनाओं को सम्बन्धित कर देता है।

मीनू मुलिन अंतर कालेजियेट भाषण प्रतियोगिता 2023 जिसे बाम्बे थिऑसफिकल फेडरेशन और यूथ रेड क्रॉस महाराष्ट्र नें शनिवार 30 सितम्बर 2023 को ब्लैवैत्सकी लॉज में सम्पन्न किया। कुल मिला कर 15 कॉलेजों से 27 प्रतियोगी सम्मिलित हुये। बहन अबान पटेल, मंच संचालक नें सभी प्रतियोगियों

का स्वागत किया और अग्रणी थिऑसफिस्ट मीनू मुलिन के बारे में बताया, जिनकी स्मृति में युवाओं को नैतिक मूल्यों के बारे में चिन्तन करनें के लिये प्रोत्साहित करनें के लिये इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। बीटीएफ अध्यक्ष बन्धु विनायक पाण्ड्या नें यूनीवर्सल प्रार्थना की अगुआई की और उसके बाद प्रतियोगियों का मनोबल बढ़ाया। उन्होंनें यूथ रेड क्रॉस के चेयरमैन रत्न गोदरेज दोतीवाला और जजों को थिऑसफिकल पुस्तकें भेंट की। रत्न दोतीवाला नें विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया और उनके लम्बे सहभागिता के लिये बीटीएफ को धन्यवाद दिया जिसनें युवाओं को अपने विचारों को साझा करने के लिये एक मंच दिया।

निर्णायकों के पैनल में बहन डेजी बोगा, स्पीच और ड्रामा शिक्षक, बहन हुजान वाडिया, वकील और थियेटर व्यक्तित्व, और बहन निधि जोशी, बैंकर और विजिटिंग फैकल्टी थीं। बीटीएफ की काउन्सिल सदस्य बहन अर्चना मुंशी नें निर्णायकों का परिचय करवाया।

5 मिनट के वक्तव्य के लिये विषयों के विकल्प थे –

1. आपकी प्रवृत्ति आपकी उंचाई निर्धारित करती है। ग्योर एट्टीच्यूड डिसाइड्स योर अल्टीच्यूडह
2. आदेशित प्रतिष्ठा इसकी मांग नहीं करती। ग्कमांडेड रेस्पेक्ट डज नॉट डिमांड इटह
3. आर्टीफिसियल इंटलीजेंस – वरदान या अभिशाप। ग्आर्टीफिसियल इंटलीजेंस बून ऑर बेनह
4. वैश्वीकरण और उसका प्रभाव। ग्ग्लोबलाइजेशन ऐन्ड इट्स इम्पैक्टह

डिजिटल युग के युवाओं नें अधिकांश पहले और तीसरे विषयों को चुना था। फिर भी विजेताओं नें अन्य दो विषयों पर बोला था। विजयी वक्तव्य को बाम्बे थिआसिस्ट के नवम्बर अंक में प्रकाशित किया गया है। सभी विद्यार्थियों को पी. पावरी की पुस्तक लिविंग विज्डम और जॉय हमल्स की ओ हिडेन लाइफ पार्टीसिपेशन प्रमाणपत्र और स्नैक्स बॉक्स के साथ भेंट की गयीं।

यूथ रेड क्रॉस महाराष्ट्र एसोसिएशन के समायोजक श्री भुवनेश साओ और सचिव बहन जॉइस पिन्टो – मुख्य संयोजक को धन्यवाद दिया गया। अन्य

यूथ रेड क्रॉस महाराष्ट्र स्वयंसेवक और लॉज के सदस्य स्वयंसेवकों को पुस्तकों की भेंट के साथ धन्यवाद दिया गया। बीटीएफ के काउन्सिल सदस्य बहन मेहरिंगीज बारिया नें धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

शांतिलीन हुये

ब्लैवैत्सकी लॉज की पिआनिस्ट, बहन फ्रेनी फिरोज पगड़ीवाला और पुस्तक भंडार की व्यवस्थापक नें दि0 17 अक्टूबर 2023 को शाश्वत प्रकाश में लीन हुये। उन्होंने अपने संगीत के माध्यम से अपने विद्यार्थियों, माता पिता और मित्रों में थिऑसफी प्रसारित की, जो बेसैन्ट हाल, ब्लैवैत्सकी लॉज में उनके संगीत कार्यक्रमों में भाग लेने आया करते थे।

बन्धु बेजी दराब मांजरा, एक विमा दलाल बिलिया लॉज की सदस्य 27 सितम्बर 2023 को शाश्वत प्रकाश को प्राप्त हुयीं। 2018 में सदस्य बननें के बाद जब तक उनके स्वाथ्य नें स्वीकृति दी, उन्होंनें विमादलाल बिलिया लॉज की प्रतिनिधि के रूप में बीटीएफ में भाग लिया। उनकी आत्मा को शांति का आशीर्वाद मिले।

कर्नाटक

प्रत्येक रविवार और गुरुवार को 6.55 पीएम पर ऑन लाइन वक्तव्य दिये गये। पुस्तक जो चुनी गयी वह डा0 आई के तैमनी की पुस्तक 'सेल्फ कल्चर' थी।

बहन डी.जे. प्रेमलीला नें 'हमारे दैनिक जीवन में बुद्धि की भूमिका' विषय पर, बहन ललिता नटराज नें 'इन्ट्यूशन और जीनियस' विषय पर, 'रोल ऑफ द सोल इन अवर लाइफ' पर और बहन के.ए. प्र षाप्रकाश ''आध्यात्मिक संकल्प शक्ति का विकास' पर वक्तव्य दिये। जुलाई में प्रत्येक गुरुवार को जो वक्तव्य दिये गये वे हैं, बहन नवरत्नम्मा नें 'प्यूरीफिकेशन' पर, बन्धु वाई.के. वासुदेव नें 'पोजेशन ऑफ द माइंड' पर, बन्धु वेंकटाचलपति नें 'स्पिरिचुअल अल्केमी' पर, और बहन ए.एन. पूतम्मा नें 'कांस्ट्रक्शन ऑफ वर्चूज' पर।

हुलियार लॉज में बन्धु एम.आर. गोपाल, बन्धु ए.आई. बसवराजा रेड्डी, बन्धु धनंजय और बन्धु एच.सी. जगदीश नें चयनित पुस्तक 'गायत्री' पर वक्तव्य दिये। बन्धु के.एन. लक्ष्मीश नें इन वक्तव्यों की वीडियो रिकार्डिंग में सहायता की।

बन्धु वेंकटरमनप्पा नें बैंगलोर सिटी लॉज में 'स्वर्गीय बन्धु के.वी. राजगोपाल शेट्टी' पर वक्तव्य दिया, जिसनें बैंगलोर सिटी लॉज के विकास में महत्वपूर्ण कदम उठाया था। यह वक्तव्य बन्धु राजगोपाल शेट्टी के जन्म दिवस के अवसर पद दि0 2 जुलाई को प्रस्तुत किया गया।

जुलाई में इसी स्थान पर हुयीं अन्य वार्तायें निम्नवत थीं –

बहन के. पार्वतम्मा नें ''आषाढ़ पूर्णिमा और चार नोबल सत्य'' पर, बहन कमल राजगोपाल नें 'धम्मचक्क प्रबर्तन सूत्र' पर, बहन बी. संध्यारानी नें 'बहन राधाजी' पर, बन्धु वेंकटाचलपति नें 'एक संकल्प और आध्यात्मिक जीवन के सिद्धांत' पर। दि0 23 जुलाई को सिटी लॉज का स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें बहन ललिता नटराज नें 'सिटी लॉज का इतिहास' पर बोला। और बहन के. पार्वतम्मा नें भी इसी विषय पर विजयनगर लॉज बैंगलोर में बोला।

बन्धु श्रीधर चक्रभावी नें 'शिक्षा और जीवन' पर जे. कृष्णमूर्ति के विचारों पर चर्चा की। उसी दिन बहन ए.एन. पूतम्मा नें ''थिऑसफिकल जीवन'' पर बैंगलोर के मल्लेश्वरम लॉज में चर्चा की। बन्धु जी. रंगधामैया नें 'ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' के 'विवेक' विषय पर चर्चा की।

देवनगिरि लॉज में 2 जुलाई को बन्धु चन्ना बसवराज नें 'चक्राज' विषय पर एक वक्तव्य दिया। उन्होंनें 8 जुलाई तक चक्रध्यान की कक्षायें संचालित कीं। बन्धु सी.बी. नागनगौड़ा नें 16 जुलाई को 'जे0 कृष्णमूर्ति का जीवन' विषय पर वार्ता की।

डा0 थिम्मराजू नें 'प्राणिक हीलिंग' पर प्रदर्शन के साथ व्याख्यान दिया। और बन्धु ओंकारप्पा नें दि0 13 जुलाई को 'ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' के 'विवेक' विषय पर चर्चा की।

कोट्टूर लॉज में बन्धु एन. हम्पन्ना नें 'आध्यात्मिक प्र र्जा का स्रोत' पर वक्तव्य दिया। 8 जुलाई को अषाढ़ पूर्णिमा मनाई गयी जिसमें बन्धु सहनकरन्ना नें इसी विषय पर एक वक्तव्य दिया।

बन्धु कोत्रेशप्पा नें 23 जुलाई को 'वर्तमान में रहो' विषय पर एक वार्ता की। बन्धु हनुमन्तप्पा नें 23 जुलाई को एक अध्ययन कैंप का निर्देशन किया और उन्होंने उसी दिन '" ूमन रिजनरेशन' पर एक वक्तव्य भी दिया। और उसके पश्चात बन्धु हम्पन्ना नें उसी दिन 'यद्भवम् तद्भवति' विषय पर वार्ता की।

बहन ललिता नटराज नें श्रीनिवासपुरा लॉज में एक अध्ययन शिविर का संचालन किया। उन्होंने 'हमें बौद्ध धर्म क्यों चाहिये' विषय पर चर्चा की। बन्धु जी.के. नटराज 'आषाढ़ पूर्णिमा का महत्व' विषय पर चर्चा की।

दि0 3 जुलाई को बेल्लारी लॉज में आषाढ़ पूर्णिमा मनायी गयी। बन्धु ए. आई. बसवराज नें बुद्ध की शिक्षाओं के बारे में चर्चा की।

गविरंगपुरा लॉज में 3 जुलाई को आषाढ़ पूर्णिमा मनाई गयी। बन्धु एम. रेडप्पाचार नें एक दिवसीय अध्ययन शिविर का आयोजन किया, जिसमें 10 लाजों के सदस्यों नें भाग लिया। बन्धु गोपालकृष्ण शेट्टी, बन्धु एच.सी. नारायणप्पा और बन्धु एच.वाई. बिल्लप्पा नें ''चार नोबल सत्य और 8 फोल्ड पाथ'' पर और बन्धु बी.के. नागराजप्पा नें ''महामंगल सूत्र'' पर व्याख्यान दिये।

डा0 एल. नागेश नें तुमकुर लॉज में दिनांक 8 और 9 जुलाई को दो दिवसीय शिविर का निर्देशन किया। जिसमें उन्होंने 'थिऑसफी के प्रकाश में वचन साहित्य' विषय पर और बन्धु एच.सी. जगदीश नें 'शतस्थल शास्त्र' पर वार्तायें कीं।

बहन ज्योति नागेश नें दि0 9 जुलाई को 'वचनामृत' पर व्याख्यान दिया।

चिन्तामणि लॉज नें दि0 9 जुलाई को अपना 116 वां स्थापना दिवस मनाया। बन्धु एम.ए. वेंकटस्वामी नें समारोह का संचालन किया और बहन पद्मम्मा नें 'एच.एस. ऑल्काट' पर और बन्धु एम. सोनप्पा रेड्डी नें लॉज के इतिहास पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

बन्धु एन. संजीव रेड्डी नें गौरीबिदनौर लॉज में 23 जुलाई को एक दिवसीय अध्ययन शिविर आयोजित किया। जिस में बहन एन. शशिकला नें 'ईशावास्य उपनिषद पर और निर्देशक नें ''पुरुष सूक्ति'' पर वार्तायें कीं।

बन्धु बी.के. नागराजप्पा नें दि0 30 जुलाई को चित्रदुर्ग लॉज में एक दिन का अध्ययन कैंप का निर्देशन किया। उन्होंनें ''आउटर कोर्ट'' पर वार्ता की बन्धु सुब्रमण्यम शेट्टी नें ''मन पर नियंत्रण और गुणवत्ता'' पर और बन्धु थिप्पेस्वामी नें ''स्पिरिचुअल अल्केमी'' पर वक्तव्य दिये।

बहन के. पार्वतम्मा नें बंगारपेठ लॉज में 28, 29 और 30 जुलाई को एक अध्ययन शिविर का निर्देशन किया। अध्ययन के लिये जो पुस्तक चुनी गयी वह

थी, 'द " ूमन रिजनरेशन' बन्धु एम. रेडप्पाचार्य नें 'टी.एस. का कार्य और मनुष्य और समाज में आधारभूत परिवर्तन' निर्देशक नें 'पुनर्जागरण और टी.एस. के उद्देश्य' पर, बन्धु एम.एस. प्रदीप 'मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा है' विषय पर, बहन आर. माधवी नें 'आध्यात्मिक प्र र्जा का स्रोत' और बहन शशिकला नें, 'परिवर्तन की प्रकृति' पर अध्ययन संचालित किये।

बहन माधवी नें देवलपल्ली लॉज में एक दिन के अध्ययन शिविर का निर्देशन किया जिसमें उन्होंनें 'आष्टांगपथ' पर बोला। बन्धु रामचनद्र नें 'आ ाढ़ उत्सव' पर और बन्धु ए. वेंकट रेड्डी नें 'बुद्ध पूर्णिमा पर वक्तव्य दिया।

बन्धु दक्षिणमूर्ति नें हसन लॉज में 25 जून को एक अध्ययन शिविर निर्देशित किया जिसमें बन्धु ए.आर. जनार्दन गुप्त, बन्धु एच.पी. राघवेन्द्राचार और बन्धु नारायण नें 'थिआसफी' पर वक्तव्य दिये। इसके अतिरिक्त 3 जुलाई को 'आषाढ़ पूर्णिमा' मनाई गयी। बन्धु गुरुलिंगाप्पा, बन्धु एम. आर. चन्द्रशेखर और बन्धु कलाचार इस अवसर पर आषाढ़ पूर्णिमा उत्सव के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये।

उत्कल

यूटीएफ मुख्यालय भुवनेश्वर में निम्नलिखित कार्यक्र म सम्पन्न हुये –

प्रत्येक रविवार को *गॉड मैन और यूनीवर्स* पर अध्ययन का संचालन।

बन्धु खगेश्वर राउत्रे स्मारक अध्ययन सत्र राष्ट्रीय वक्ता बहन पौर्नमासी महापात्रा नें संचालित किया। अध्ययन के लिये 'नो अॅदर पाथ टू गो' पुस्तक चुनी गयी।

बन्धु चिंतामणि महापात्रा की स्मृति में दि0 23 और 24 जुलाई को अध्ययन शिविर का आयोजन हुआ। इसे बन्धु प्रदीप कुमार महापात्रा राष्ट्रीय वक्ता नें किया।

लॉज का पुनर्स्थापन

बरहामपुर थिऑसफिकल लॉज का पुनर्स्थापन किया गया। डा0 चित्तरंजन सत्पथी, अध्यक्ष, सचिव बहन मितालिनी चौधरी, और कोषाध्यक्ष बन्धु सत्यव्रत रथ नें बरहाम पुर का दौरा किया और 16 नये सदस्यों ने सदस्यता ली।

जगतसिंहपुर थिऑसफिकल लॉज की पुनर्स्थापना डा0 चित्तरंजन

सत्पथी, बन्धु प्रदीप कुमार महापात्रा, बहन मितालिनी चौधरी और बन्धु दुर्जोधन शाहू के प्रयासों से पुनर्स्थापित हुआ। नौ नये सदस्यों ने सदस्यता ग्रहण की।

नये लॉज की स्थापना

तेलंग बाजार, कटक में बहन चिन्मयी महापात्रा और डा0 चित्तरंजन सत्पथी के निष्ठापूर्ण प्रयासों से अशोक थिऑसाफिकल लॉज की स्थापना की गयी।

अलाना में बहन मितालिनी चौधरी और बन्धु प्रदीप कुमार महापात्रा के प्रयासों से 15 नये सदस्यों के साथ गोपाल जी थिऑसफिकल लॉज की स्थापना की गयी।

अन्य गतिविधियां

बरबटी लॉज में ऑन लाइन वार्तायें हुयीं जिनमें बन्धु ध्रुब प्रसाद पांडा ने कथा उपनिषद पर और बन्धु पी.सी. मिश्रा नें 'भारत की विरासत' और राष्ट्रीय वक्ता बन्धु बी.डी. तेन्दूलकर नें 'व्यक्ति का प्रवृत्ति मार्ग से निवृत्ति मार्ग पर मुड़ना' पर चर्चायें कीं।

मरु लॉज के आयोजन में डा0 पातंजलि त्रिपाठी नें सात पारिमिताओं के बारे में यूटीएफ हाल में वक्तव्य दिया।

सिद्धार्थ लॉज में 24 जुलाई को 'हम अपने लिये नहीं दूसरों के लिये जीते हैं' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन हुआ जिसमें बहन मितालिनी, बहन पौर्नमासी, बहन सिंगधा, बहन नीलेन्द्री, बहन बन्दना, बहन स्वर्ण और बहन शैला नें अपने विचार साझा किये।

28 अगस्त को 'हमारे अच्छी मंशाओं के बाद उन पर प्रभावी कार्य होने चाहिये' विषय पर विवेचन हुये जिस पर बहन कल्पना पाधी, बहन रीना, बहन कस्तूरी, सिंगधा और बन्धु ध्रुब प्रसाद पांडा नें अपने विचार व्यक्त किये।

सम्भलपुर लॉज में 15 अगस्त को 24वां स्थापना दिवस मनाया गया। प्रो0 सुरेन्द्र नें इस अवसर पर 'स्टैंजा ऑफ ध्यान' पर एक वक्तव्य दिया। प्रत्येक सदस्य नें विवेचनों में भाग लिया।

बलेश्वर लॉज में बन्धु पार्थसारथी सारंगी, राष्ट्रीय वक्ता नें एक सप्ताह की अध्ययन माला संचालित की। अध्ययन के लिये 'मनुष्य के सात कोष' ली गयी।

कटक लॉज में पुस्तक 'पुनरावर्तन' प्रतिदिन सोमवार से शुक्रवार तक संचालित किया गया।

सनत कुमार लॉज में दि0 9 अगस्त को स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के आयोजक बन्धु आर.सी. पटनायक, अध्यक्ष और बन्धु सत्यव्रत रथ थे। डा0 के.पी. पाधी और बहन मितालिनी चौधरी इस अवसर पर 'तर्कबुद्धि और प्रज्ञान' विषय पर अपनें विचार व्यक्त किये।

भुवनेश्वर लॉज नें दि0 16 सितम्बर को यूटीएफ हाल में अपना स्थापना दिवस मनाया। डा0 केपी पाधी, अध्यक्ष ने वैठक की अध्यक्षता की, बहन पौर्नमासी पटनायक और बहन मितालिनी चौधरी नें 'खुशी की खोज' विषय पर वक्तव्य दिये। बहन स्वर्णलता दास नें सभी को धन्यवाद दिया।

भुवनेश्वर लॉज में उपाध्यक्ष बहन स्वर्णलता दास नें प्रत्येक गुरुवार और शनिवार को विवेकानन्द विहार में एक अध्ययन सत्र का आयोजन किया। इस अवसर पर बहन पौर्नमासी और बहन मितालिनी नें *'ब्रह्मविद्या भाख्यान'* पुस्तक पर अध्ययन संचालित किये।

यूपी एवम् उत्तराखण्ड

धर्म लॉज लखनऊ में 1 अक्टूबर को डा0 ऐनी बेसैन्ट का जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बन्धु यू.एस. पांडेय नें इस महान थिऑसफिकल नायिका के जीवन और उनके बहुआयामी कार्यों पर वार्ता की। कार्यक्रम के अंत में उन्हें श्रद्धा अर्पित की गयी। दि0 4 और 11 अक्टूबर को क्रमशः बन्धु प्रमिल द्विवेदी और बन्धु यू.एस. पाण्डेय नें 'पुनर्जन्मों और देवाचन के मध्य समयान्तर' और 'जीवन का खेल' में वक्तव्य दिये। दि0 18 और 25 अक्टूबर को हुयी बैठकों में राधा बर्नियर की पुस्तक 'वे टू सेल्फ नॉलेज' पर बन्धु बी.के. पांण्डेय द्वारा अध्ययन संचालित किया गया।

निर्वाण लॉज आगरा में दि0 5 अक्टूबर को 'खुशी का कारण' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन हुआ। दि0 19 और 26 अक्टूबर को क्रमशः 'वेदान्त एक जीवन दर्शन' और 'शिवशक्ति – एक आध्यात्मिक यात्रा' विषयों पर बन्धु विजय श्रीवास्तव और बन्धु श्याम कुमार शर्मा नें वक्तव्य दिये।

सर्वहितकारी लॉज गोरखपुर में 1 अक्टूबर को डा0 ऐनी बेसैंट का जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें 'ऐनी बेसैंट का

जीवन और उनके कार्य' विषय पर वक्तव्य दिया। दि0 11, 18 और 25 को हुयी बैठकों में क्रमशः 'मैन विजिबल और इनविजिबल', 'यहूदी धर्म' और 'पांच को ा' विषयों पर बन्धु अरविन्द राय, बन्धु ए.पी. श्रीवास्तव और बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें वार्तायें कीं।

चतुर्भुज लॉज बंसगांव जि0 गोरखपुर में बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा नें दि0 3 अक्टूबर को 'अद्वैत ब्रह्म' विषय पर चर्चा की।

प्रयास लॉज गाजियाबाद में बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें दि0 8 और 15 अक्टूबर को क्रमशः 'ऐनी बेसैन्ट का जीवन परिचय' और 'ऐन एप्रोच टू रियलिटी' विषयों पर अध्ययन संचालित किया।

बहन प्रांशी मोहन्ता नें भारतीय सेक्शन के ई न्यूजलेटर की डिजाइन और सम्पादन में सहयोग किया।

नोयडा लॉज, नोयडा में 1 अक्टूबर को ऐनी बेसैंट का जन्म दिन मनाया गया, जिसमें 'ऐनी बेसैंट का जीवन और कार्य' विषय पर चर्चायें की गयीं। लॉज में 'निर्वाण' पुस्तक के आठवें अध्याय का अध्ययन जारी रहा।

चोहान लॉज कानपुर में 1 अक्टूबर को डा0 ऐनी बेसैंट का जन्म दिन मनाया। दि0 15 अक्टूबर को 'आत्म ज्ञान ही प्रज्ञान है' विषय पर परिचर्चा का आयोजन हुआ। दि0 22 और 29 अक्टूबर को क्रमशः 'सूफिज्म' और 'वास्तविक और अवास्तविक' विषयों पर बहन सुषमा श्रीवास्तव और बन्धु एस.एस. गौतम नें वक्तव्य दिये।

आनन्द लॉज प्रयागराज में 29 अक्टूबर को बहन अर्चना पाण्डेय नें 'सांसों का विज्ञान' विषय पर वार्ता की।

काशी तत्व सभा वाराणसी में 1 अक्टूबर को ऐनी बेसैंट का जन्म दिन मनाया गया। दि0 20 अक्टूबर को बन्धु प्रदीप महापात्रा नें 'यूनीवर्सल मेधा की खोज और समझ' पर व्याख्यान दिया।

ऐनी बेसैंट लॉज वाराणसी में 'द अल्टीमेट रियलिटी ऐंड द रियल' पुस्तक के 'साक्तोपाय' अध्याय पर विवेचन और अंतरंग कार्यक्रम हुआ।

मैत्रेय लॉज, नोयडा में दि0 8 अक्टूबर को बन्धु डी.के. सत्संगी नें 'प्रत्यभिज्ञ " दयं पर वार्ता की।

प्रज्ञा लॉज लखनप्र में 1 अक्टूबर को ऐनी बेसैंट का जन्म दिन मनाया गया। इसके अतिरिक्त दि0 8 और 22 अक्टूबर को बहन वासुमती अग्निहोत्री नें 'ऐट द फीट ऑफ द मास्टर' पर अध्ययन संचालित किया।

फेडरेशन का वार्षिक अधिवेशन

यूपी और उत्तराखण्ड फेडरेशन का 104 वां अधिवेशन दि0 7 और 8 अक्टूबर 2023 को भारतीय सेक्शन मुख्यालय टी.एस. वाराणसी में सम्पन्न हुआ।

भारतीय सेक्शन मुख्यालय

भारतीय सेक्शन, थिऑसफिकल सोसाइटी वाराणसी के मुख्यालय में दि0 1 अक्टूबर को समाज सुधारक और दृष्टा डा0 ऐनी बेसैंट का 176 वां जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर काशी तत्व सभा के अध्यक्ष के द्वारा ऐनी बेसैंट हाल में उनको भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके अतिरिक्त बन्धु प्रदीप महापात्रा द्वारा एक ऑन लाइन कार्यक्रम संचालित किया गया जिसमें अनेक लोगों ने ऐनी बेसैंट के व्यक्तित्व के अन्यान्य पहलुओं पर वार्तायें की।

इस समारोह के पहले वक्ता बन्धु आर्नी नरेन्द्रन, को ाध्यक्ष और ट्रस्टी ब्लैवैत्सकी लॉज, मुम्बई थे। उनकी वार्ता का विषय था, ''ऐनी बेसैन्ट, भारत के इतिहास में एक चमकता हुआ सितारा'। उन्होंनें उनके शक्तिशाली व्यक्तित्व के अन्यान्य पहलुओं पर विस्त्रित और स्पष्ट प्रकाश डाला। उन्होंने संक्षिप्त रूप में बीएचयू की स्थापना और मानवीय मूल्यों के विकास में ऐनी बेसैंट की भूमिका के बारे में विवेचन किया। उन्होंनें कहा कि डा0 बेसैन्ट को मानवीयता के विकास के लिये उनके कार्यों को सदा याद किया जायेगा।

दूसरी वक्ता बहन सुषमा श्रीवास्तव, थिऑसफिकल सोसाइटी की आजीवन सदस्य और आनन्द लॉज प्रयागराज सचिव थीं। उनका विषय था 'ऐनी बेसैंट, ऐन अकल्टिस्ट'। उन्होंनें अकल्टिस्ट शब्द की व्युत्पत्ति, पर्याय और उसके संदेश को ऐनी बेसैंट के व्यक्तित्व के माध्यम से व्याख्या की। ऐनी बेसैंट के अनुसार 'संसार की गूढ़ शक्तियों को जानने की शक्ति को अकल्ट पावर कहते हैं'। उन्होंने आगे जोड़ा कि ऐनी बेसैंट एक सच्ची अकल्टिस्ट थीं और उन्होंनें अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के हित के लिये लगाया।

इस अवसर की तीसरी वक्ता बहन श्रीप्रिया राघवन, को ाध्यक्ष मद्रास फेडरेशन थीं। उन्होंनें 'ऐनी बेसैंट – एक समाज सुधारक' विषय पर बोला।

उनके अनुसार डा0 बेसैंट एक योद्धा थीं जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिये युद्ध किया। उनकी शिक्षाविद्, थिऑसफिस्ट, लेखक और क्रांतिकारी के रूप में याद किया जाता है। वे एक दूरदृष्टा थीं और उन्होंने आत्म नियंत्रण पर बल दिया जो ऐनी बेसैंट के अनुसार सच्ची स्वतंत्रता का आधार है।

कार्यक्रम का मॉडरेशन बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें किया। धन्यवाद प्रस्ताव भी उन्हीं नें प्रस्तुत किया।

डा0 बेसैंट के जन्म दिवस के अवसर पर 'प्रोग्रेसन ऑफ डा0 ऐनी बेसैन्ट्स स्पिरिट कमेटी', वसन्त कन्या महाविद्यालय, कामाच्छा, वाराणसी नें 1 अक्टूबर को एक ऑन लाइन कार्यक्रम आयोजित किया और इस दिन को प्रोत्साहन और गर्मजोशी से मनाया।

इंडियन सेक्शन का अध्ययन कैंप

वर्ष 2023 का इंडियन सेक्शन अध्ययन कैंप वाराणसी में भारतीय सेक्शन टी.एस. मुख्यालय में 29 से 31 अक्टूबर की अवधि में सम्पन्न हुआ।

7वें अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 राधा बर्नियर की जन्म शताब्दी मनाई गयी थी।

पूज्य राधाजी नें वर्ष मई 1979 में थिऑसफिकल सोसाइटी इन इंग्लैंड के वार्षिक अधिवेशन में 'ब्लैवैत्सकी लेक्चर' दिया था। उनकी वार्ता का विषय था 'द वे ऑफ सेल्फ नॉलेज' जिसे बाद में थिऑसफिकल पब्लिशिंग हाउस नें प्रकाशित किया। इस पुस्तक को भारतीय सेक्शन मुख्यालय में हुये अध्ययन शिविर में अध्ययन के लिये चुना गया।

अध्ययन कैंप का संचालन राष्ट्रीय वक्ता बन्धु एन.सी. कृष्णा नें किया। अध्ययन कैंप का उद्घाटन भारतीय सेक्शन के अध्यक्ष बन्धु प्रदीप एच. गोहिल नें किया। प्रति दिन 2 अध्ययन सत्र प्रातःकाल में और दो सत्र अपराह्न में आयोजित किये गये। विभिन्न फेडरेशनों के 100 से अधिक सदस्यों ने कैंप में भाग लिया। अध्ययन सत्रों को ऑन लाइन भी प्रसारित किया गया ताकि जो कैंप में नहीं आ पाये हैं वे भी सम्मिलित हो सकें। छोटी सी पुस्तक, जो प्रज्ञान से ओत प्रोत है, में भूमिका को मिला कर 12 सेगमेंट हैं। श्रीमती राधा जी नें आत्मज्ञान के लिये अंतर की यात्रा की विधि के बारे में व्युत्पन्नात्मक ख्डेरीवेटरीह्ढंग से विवेचन किया है। अनेक वैध बिन्दुओं का अध्ययन और उनका सावधानी पूर्ण विवेचन किया गया। 'द वे ऑफ द सेल्फ नॉलेज' पुस्तक में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव हैं। सुझावों की मणि जो राधा जी नें प्रस्तावित की है वह है कि 'आसक्तियों से मुक्ति' पानें का अभ्यास किया जाना चाहिये। यह 'आत्म ज्ञान' जो शाश्वत प्रज्ञान है को प्राप्त करने और उसके निकट पहुंचनें की कुंजी है।

अध्ययन के बाद प्रश्नोत्तरों का अंतरंग सत्र हुये जिनमें प्रतिभागियों नें भाग लिया। प्रतिभागियों ने शिविर में प्रस्तुत विचार और उन पर हुये विवेचनों की प्रशंसा की।

बन्धु प्रदीप महापात्रा, कैम्प आफीसर और भारतीय सेक्शन के सहायक स्वयंसेवकों नें शिविर को एक स्मारक कार्यक्रम बना दिया।

श्रीमती मंजू सुन्दरम 31 अक्टूबर 3 पी.एम. पर एक वक्तव्य 'राधा जी के प्रति कृतज्ञता भाव का अर्पण उनकी स्मृति के साथ' पर दिया। यह स्मृतियों और

उनसे सम्बन्धित किस्सों से परिपूर्ण था। यह राधा जी के व्यक्तिगत जीवन के बारे में मंजू सुन्दरम की " दय स्पर्शी प्रस्तुति थी।

राधा जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में इंडियन थिऑसफिस्ट का विशे ांक बन्धु एस. सुन्दरम् के द्वारा विमोचित किया गया।

दि0 29 अक्टूबर की संध्या को 'रिचुअल ऑफ द मिस्टिक स्टार' संचालित किया गया।

दि0 29 अक्टूबर की संध्या में भारतीय सेक्शन नें सभी प्रतिभागियों का स्नेह मिलन आयोजित किया।

सेवा में,
भारतीय सेक्शन के सभी सदस्य
द थिऑसफिकल सोसाइटी।

विषय : थिऑसफिकल सोसाइटी की 'वर्ल्ड कांग्रेस' जो वैंकुअर कनाडा में 23 से 27 जुलाई 2025 को आयोजित होगी में प्रतिभागिता।

थिऑसफिकल सोसाइटी के भारतीय सेक्शन नें निर्णय लिया है कि सेक्शन की ओर से 100 सदस्यों को 12 वीं 'वर्ल्ड कांग्रेस' में भाग लेने के लिये स्पांसर किया जायेगा, जो वैंकुअर, कनाडा में 23 से 27 जुलाई 2025 की अवधि में आयोजित होगी।

वर्ल्ड कांग्रेस में भाग लेने के अभ्यार्थी सदस्य संलग्न प्रारूप में अपना प्रार्थना पत्र 31 जनवरी 2024 तक भारतीय सेक्शन को भेज दें।

जो सदस्य अंतिम रूप से इंडियन सेक्शन की सेलेक्शन कमेटी द्वारा चुनें जाते हैं उन्हें स्वयं भारत में हाई कमीशन ऑफ कनाडा को एप्लाई करना होगा और वीसा अप्लीकेशन के लिये जो भी शुल्क देय है वह देना होगा।

भारतीय सेक्शन चुने हुये सभी 100 सदस्यों के लिये एयर टिकट, साथ में बोर्डिंग, लॉजिंग, और पंजीकरण शुल्क के भुगतान की व्यवस्था करेगा।

कृपया सुनिश्चित करें कि 2025 में वैंकुअर में होने वाली वर्ल्ड कांग्रेस में भाग लेने हेतु विचार के लिये प्रार्थनापत्र केवल निम्नलिखित ई मेल पते पर भेजें –

"indiansectionworldcongress@gmail.com" जो प्रार्थनापत्र 'theosophyvns@gmail.com' पर भेजे जायेंगे, उन पर विचार न हो पाने की सम्भावना है।

प्रदीप एच. गोहिल
अध्यक्ष
भारतीय सेक्शन